रॉबर्ट वैनॉय , प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 14

यशायाह 40 ओवरचर, प्रभु का सेवक थीम

यशायाह 40 ओवरचर परिचय

अपनी शीट पर देखें , यशायाह अध्याय 40 "ओवरचर" है, जो इस सामग्री की एक संगीत रचना के साथ तुलना करने के मैकरे के सुझाव के अनुरूप है। अध्याय 40 अपने आप में एक इकाई है, जो निम्नलिखित से कुछ अलग है। और मैकरे ने सुझाव दिया है कि इसकी तुलना एक संगीत रचना के प्रस्ताव से इस अर्थ में की जाती है कि यह कई विषयों को छूता है जो बाद के अध्यायों में दोहराए जाते हैं । यह इन विषयों का परिचय देता है। फिर अगले अध्यायों में इन विषयों को और विकसित किया गया है। लेकिन अध्याय 40 में, सब कुछ बिल्कुल सामान्य प्रतीत होता है। यह उतना स्पष्ट, या विशिष्ट नहीं है, जितनी इसके बाद की सामग्री है; यह बिल्कुल सामान्य है. भगवान कहते हैं कि वह उद्धार करने जा रहे हैं, लेकिन अध्याय में किसी विशिष्ट उद्धार का विशेष संदर्भ नहीं है; यह अधिक सामान्य है. ऐसे लोग हैं जो पीड़ित हैं, ऐसे लोग हैं जो दुःख में हैं; और विचार यह है कि उन्हें उनके कष्टों से मुक्ति मिल जाएगी। अब यह निर्वासन में लोगों पर लागू होगा, लेकिन यह उन लोगों पर भी लागू हो सकता है जो पाप के परिणामों से पीड़ित हैं - भगवान उन्हें बचाने जा रहे हैं। दूसरे शब्दों में, वह पाप की समस्या से निपटेगा और उससे मुक्ति का साधन प्रदान करेगा। निःसंदेह, अंततः यह मसीह के आगमन के माध्यम से आता है। तो इस अध्याय में एक निश्चित खुशी शामिल है, और वह मसीह के आगमन की खुशी है, साथ ही निर्वासन से मुक्ति से संबंधित खुशी भी है। यह सब अध्याय 40 में दिखाई देता है।

इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अध्याय 40 बाइबिल के महान अध्यायों में से एक है। यह निश्चित रूप से एक ऐसा अध्याय है जिसे अक्सर कई लोग पढ़ते हैं, विशेषकर वे लोग जो दुःख में या पीड़ा में हों; जो लोग सोच रहे हैं कि भगवान क्या कर रहा है उन्हें इस अध्याय में बहुत आराम मिल सकता है।

यशायाह 40:1-2 यरूशलेम को सांत्वना आइए पहले दो छंदों को देखें। “ मेरी प्रजा को शान्ति

दे, शान्ति दे, तेरा परमेश्वर कहता है। यरूशलेम से कोमलता से बात करो, और उसे घोषित करो कि उसकी कठिन सेवा पूरी हो गई है, कि उसके पापों का भुगतान हो गया है, कि उसे अपने सभी पापों के लिए प्रभु के हाथ से दोगुना मिल गया है । यरूशलेम में आराम आना है। यरूशलेम पीड़ित रहा है. परन्तु अब उसे सान्त्वना देनी है; उसे बताया गया है कि उसका युद्ध पूरा हो गया है। अर्थात् उसकी कठिन सेवा, उसका अनिवार्य श्रम, उसकी युद्ध सेवा पूरी हो चुकी है। अंतिम वाक्यांश, "उसे अपने सभी पापों के लिए प्रभु के हाथ से दोगुना प्राप्त हुआ है," इसे आमतौर पर सजा के रूप में समझा जाता है - उसे अपने सभी पापों के लिए दोगुना प्राप्त हुआ है।

"डबल" (?) या स्थानापन्न/समतुल्य लेकिन अपने उद्धरणों को देखें - मैकरे ने पृष्ठ 29 पर एक दिलचस्प सुझाव दिया है। *यशायाह के उनके सुसमाचार के पृष्ठ 40-43 से लिया गया है*, जिसका मैं यशायाह के इस खंड पर उल्लेख कर सकता हूं - ए बहुत उपयोगी छोटी किताब. “बल्कि एक असामान्य व्याख्या यह धारणा है कि यहां 'डबल' का अर्थ 'दोहरा आशीर्वाद' है, और यह वाक्यांश एक वादा है कि इज़राइल को उसके सभी पापों के बावजूद दोगुना आशीर्वाद मिलेगा। इस तरह की व्याख्या में भाषाशास्त्रीय औचित्य का अभाव है। 'डबल' शब्द में 'आशीर्वाद' के विचार को शामिल करने का कोई आधार नहीं है। कठिनाई का समाधान इस मान्यता में निहित है कि यहां इस्तेमाल किया गया हिब्रू शब्द, कई में से एक जिसका आमतौर पर अनुवाद 'डबल' किया जाता है, को उचित रूप से अंग्रेजी शब्द 'डबल' के समान माना जा सकता है जब किसी ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए उपयोग किया जाता है जो इतना दिखता है दूसरे की तरह कि उन्हें अलग करना मुश्किल है।

मैं समझता हूं कि सद्दाम हुसैन के बारे में कहा जाता है कि उसके कई साथी थे। जो लोग उसके जैसे दिखते हैं कि आप कभी नहीं जान पाते कि वह कहाँ है क्योंकि उसके पास एक डबल है। उनमें से प्रत्येक एक दूसरे से दोगुना है, लेकिन किसी को भी उसके बराबर या दूसरे से दोगुना नहीं माना जाना चाहिए। हिब्रू शब्द को "समकक्ष," "समकक्ष," या "स्थानापन्न" प्रस्तुत करना स्पष्ट हो सकता है। यह वाक्यांश उस समय की प्रतीक्षा करता है जब भगवान घोषणा करेंगे कि सभी

विश्वासियों के पाप के बराबर भुगतान किया गया है। कोई भी आदमी यह जुर्माना नहीं भर सकता था; केवल भगवान का दिव्य सेवक ही ऐसा कर सकता था। तो आप देखते हैं कि मैकरे इस कथन को समझती है, "उसने अपने सभी पापों के लिए प्रभु के हाथ से दोगुना प्राप्त किया है" - यह विचार कि उसे प्रभु के हाथ से अपने सभी पापों के लिए एक समतुल्य, एक प्रतिरूप, एक विकल्प प्राप्त हुआ है, और इंगित करता है मसीह के लिए आगे. लेकिन किसी भी मामले में, भगवान कहते हैं कि उनके लोगों को सांत्वना दी जानी चाहिए। इसे बाबुल से निर्वासन से मुक्ति के साथ कुछ संबंध के रूप में देखा जा सकता है , लेकिन मुझे लगता है कि अधिक मूल रूप से, और महत्वपूर्ण रूप से, इसका संदर्भ मसीह के माध्यम से पाप से मुक्ति है। ध्यान दें, मुझे लगता है कि मैकरे का सुझाव निश्चित रूप से विचार करने योग्य है, विशेष रूप से कविता के बीच में उस वाक्यांश के कारण, "उसकी कठिन सेवा पूरी हो गई है, कि उसके पाप का भुगतान किया गया है।" "उसका अधर्म क्षमा हो गया।" ठीक है, समकक्ष या स्थानापन्न, इज़राइल के समकक्ष एक व्यक्ति को उसके स्थान पर लाया गया है, और उसके पाप का प्रायश्चित किया गया है, यही वह विचार है जो वह सुझा रहा है। दूसरे शब्दों में, यदि आप इसे केवल निर्वासन से लौटने तक ही सीमित रखते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसका अधर्म क्षमा कर दिया गया है। ऐसा लगता है कि यहां और भी कुछ शामिल है।

यशायाह 40:3-5 परमेश्वर का उद्धार

श्लोक 3-5. मुक्ति के विचार पर आगे बल दिया गया है: " किसी की आवाज़ सुनाई देती है: 'जंगल में प्रभु के लिए रास्ता तैयार करो; जंगल में हमारे परमेश्वर के लिये एक राजमार्ग सीधा करो। हर एक तराई ऊंची की जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; ऊबड़-खाबड़ भूमि समतल हो जाएगी, और ऊबड़-खाबड़ भूमि मैदान बन जाएगी। और यहोवा की महिमा प्रगट होगी, और सारी मनुष्य जाति मिलकर उसे देखेगी। क्योंकि यहोवा के मुख ने यही कहा है।' " फिर से मुक्ति का विचार - भगवान का उद्धार हाथ में है, एक रास्ता सीधा बनाना है। यह निर्वासन पर लागू हो सकता है - दूसरे शब्दों में, बेबीलोन में लोग पहाड़ियों, घाटियों और सभी प्रकार की

कठिनाइयों को दूर होते हुए देखते हैं जो उन्हें अपनी मातृभूमि से अलग करते हैं, जिससे वे वापस जाने में सक्षम होते हैं।

जॉन द बैपटिस्ट संदर्भ [लूका 3:4-6; मत 3:1-3; मरकुस 1:2-3; जेएन 1:19-23] लेकिन दिलचस्प बात यह है कि, सभी चार सुसमाचारों में, इस खंड को जॉन द बैपटिस्ट के संदर्भ के रूप में लिया गया है। "उसकी आवाज जंगल में चिल्लाती है, 'प्रभु का मार्ग तैयार करो।'" ल्यूक 3:4-6 को देखें, " जैसा यशायाह भविष्यवक्ता के शब्दों की पुस्तक में लिखा है: 'एक की आवाज जंगल में पुकारते हुए, "प्रभु के लिए रास्ता तैयार करो," उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ। हर घाटी भर दी जाएगी, हर पहाड़ और पहाड़ी को नीचा कर दिया जाएगा। टेढ़े-मेढ़े रास्ते सीधे हो जायेंगे, उबड़-खाबड़ रास्ते चिकने हो जायेंगे। और सारी मानवजाति परमेश्वर के उद्धार को देखेगी ।" ल्यूक के संदर्भ में, वह जॉन द बैपटिस्ट के मंत्रालय से बात कर रहा है। पद 3 कहता है, “ वह जॉर्डन के आसपास के सारे देश में गया और पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मा का प्रचार करता रहा; जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता के वचनों की पुस्तक में लिखा है। ” मत्ती 3:3. मत्ती 3:1 कहता है, " उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यहूदिया के जंगल में उपदेश करता हुआ आया, और कहा, 'पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।' यह वही है जिसके बारे में भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा कहा गया था: 'जंगल में किसी की आवाज सुनाई देती है, 'प्रभु के लिए रास्ता तैयार करो, उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ।" मरकुस 1:2 और 3, " की एक आवाज " जंगल में कोई बुला रहा है, 'प्रभु के लिए रास्ता तैयार करो, उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ ।" जॉन ने जंगल में बपतिस्मा दिया, और पश्चाताप के बपतिस्मा का प्रचार किया। और फिर यूहन्ना 1:19-23, "यह यूहन्ना की गवाही है।" पद 23 तक, " उन्होंने कहा, 'मैं नहीं हूं।' क्या आप पैगंबर हैं? उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं.' आख़िरकार उन्होंने कहा, 'तुम कौन हो? हमें उन लोगों के पास वापस ले जाने के लिए उत्तर दीजिए जिन्होंने हमें भेजा है। आप अपने बारे में क्या कहते हैं?' जॉन ने यशायाह भविष्यवक्ता के शब्दों में उत्तर दिया, 'मैं रेगिस्तान में पुकारने वाले की आवाज हूं, 'प्रभु के लिए रास्ता सीधा करो। '

तो जब आप पद 5 पर पहुँचते हैं और यह कहता है, "प्रभु की महिमा प्रकट होगी," तो यह

निश्चित रूप से चरमोत्कर्ष है और आप अवतार के अलावा और क्या सोच सकते हैं? "प्रभु की महिमा प्रकट होगी।" यूहन्ना 1:14, “ वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में वास किया। हमने उसकी महिमा देखी है, एक और एकमात्र की महिमा, जो अनुग्रह और सच्चाई से भरपूर, पिता की ओर से आई है । जॉन ने मसीह के आने के मार्ग की घोषणा की।

यशायाह 40:6-8 "रोने" का सन्देश

अब, जब आप यशायाह 40:6-8 पर पहुंचते हैं, तो विचार में पूर्ण परिवर्तन होता है: " एक आवाज कहती है, 'चिल्लाओ।' और मैंने कहा, 'मैं क्या रोऊँगा?' 'सभी मनुष्य घास के समान हैं, और उनकी सारी शोभा मैदान के फूलों के समान है। घास सूख जाती है और फूल गिर जाते हैं क्योंकि यहोवा की सांस उन पर चलती है। निश्चय ही लोग घास हैं। घास सूख जाती है और फूल झड़ जाते हैं, लेकिन हमारे परमेश्वर का वचन हमेशा कायम रहता है।" यहां मूल विचार मानव और सांसारिक हर चीज को सहन करने में विफलता है। इसके विपरीत, परमेश्वर का वचन सदैव कायम रहता है।

अब, यह बहुत सामान्य है; इसे कई स्थितियों में लागू किया जा सकता है. शायद, निर्वासित लोगों के लिए, आप बेबीलोन की शक्ति की महानता के बारे में सोच रहे होंगे। यशायाह जो कह रहा है वह यह है कि मानव शक्ति क्षणिक है, भ्रामक है; सभी प्राणी घास हैं: वह सूख जाते हैं और मुरझा जाते हैं, परन्तु प्रभु का वचन सदैव स्थिर रहता है।

यशायाह 40:9 ईश्वर मुक्ति लाता है श्लोक 9 यरूशलेम को आराम देने के विचार पर वापस लौटता है क्योंकि ईश्वर मुक्ति लाएगा। मुझे लगता है, इसके विवरण में गए बिना, मुझे लगता है कि एनआईवी वहां एक बेहतर अनुवाद है। ध्यान दें कि राजा जेम्स कहते हैं, "हे सिय्योन, जो शुभ समाचार लाता है, ऊंचे पर्वत *पर* चढ़ जाओ," जबकि यदि आप एनआईवी, श्लोक 9 को देखें, "हे सिय्योन, जो शुभ समाचार लाता है, ऊंचे पर्वत पर चढ़ जाओ" . हे यरूशलेम *को शुभ समाचार सुनानेवालों*, ऊंचे शब्द से ऊंचे शब्द से चिल्लाओ, ऊंचे शब्द से चिल्लाओ, मत डरो; यहूदा के नगरों से कहो, 'तुम्हारा परमेश्वर यहाँ है!'” यरूशलेम को सांत्वना दो क्योंकि परमेश्वर छुटकारा दिला रहा है।

यशायाह 40:10-11 उसके उद्धार की महानता श्लोक 10 और 11 उसके उद्धार की महानता है। "देखो, प्रभु यहोवा सामर्थ्य के साथ आता है, और उसकी भुजा उसके लिये प्रभुता करती है। देखो, उसका प्रतिफल उसके साथ है, और उसका प्रतिफल भी उसके साथ है। वह चरवाहे के समान अपने झुंड की देखभाल करता है: वह मेमनों को अपनी बाहों में इकट्ठा करता है और उन्हें अपने दिल के करीब रखता है; वह उन लोगों की धीरे से अगुवाई करता है जो जवान हैं।" यहोवा शक्तिशाली है; वह जो चाहता है उसे पूरा करेगा। राजा जेम्स कहते हैं, "प्रभु बलवन्त हाथ के साथ आयेंगे; उसका हाथ उसके लिये शासन करेगा।" अतः वह बलवान है; वह जो ठान लेता है उसे पूरा करने में सक्षम होता है। परन्तु अपने लोगों के प्रति वह एक चरवाहे के समान है, "जो मेमनों को अपनी गोद में इकट्ठा करता, और अपनी गोद में रखता है; वह उन लोगों की धीरे से अगुवाई करता है जो युवाओं के साथ हैं।" तो, यह उसके उद्धार की सज्जनता की बात करता है।

यशायाह 40:12 संक्रमण टी फिर श्लोक 12 के साथ आपको फिर से एक छोटा संक्रमण मिलता है। मैं आपको यहां एक हैंडआउट देना चाहता हूं और शेष अध्याय के लिए एक ओवरहेड रखना चाहता हूं। आयत 12 कहती है, " किस ने अपनी हथेली से जल को मापा, या अपनी हथेली से आकाश को मापा है? किस ने पृथ्वी की धूल को टोकरी में रखा, या पहाड़ों को तराजू में, और पहाड़ोंको तराजू में तौला है? " आपको 11 और 12 के बीच विचारों का तीव्र परिवर्तन देखने को मिलता है। ग्यारह में चरवाहे द्वारा मेमनों को अपनी बाहों में ले जाने और बच्चों को धीरे से ले जाने के बारे में बताया गया है। यहां आप एक बिल्कुल अलग विचार के साथ आते हैं: 11 में प्रभु की सज्जनता पर जोर दिया गया है, लेकिन यह कमजोरी का संकेत नहीं है।

श्लोक 12 और उसके अनुयायी भगवान की तुलना अन्यजातियों के देवताओं से करते हैं और बताते हैं कि उनकी शक्ति कितनी महान है, विशेषकर उनकी रचनात्मक शक्ति। निश्चित रूप से ईश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति का विचार उन लोगों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो पीड़ित हैं। यह निर्वासित लोगों के लिए महत्वपूर्ण होगा; यह यशायाह के समय में, मनश्शे के समय में लोगों के लिए महत्वपूर्ण होगा; किसी भी कठिनाई और पीड़ा के समय में यह लोगों के लिए

महत्वपूर्ण है। जब आप उस तरह की स्थिति में होते हैं, तो यह सोचने की प्रवृत्ति होती है कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है, या वह शक्तिहीन है।

अध्याय 40 के बाद की सामग्री में कई अंश हैं जो ईश्वर की महानता और शक्ति पर जोर देते हैं। अब, यदि आप श्लोक 12 से 31 की संरचना को ध्यान से देखें, तो मुझे लगता है कि आप देख सकते हैं कि अध्याय बहुत सावधानी से बनाया गया है। भले ही वह संरचना एक विचार से दूसरे विचार से दूसरे विचार और वापस पहले विचार पर स्थानांतरित होने से अस्पष्ट हो सकती है - इस तरह की बहुत सी गतिविधियाँ होती हैं - अध्याय बेतरतीब नहीं है। संरचना और भागों के एक-दूसरे से संबंध की खोज के लिए उचित मात्रा में अध्ययन और काम की आवश्यकता होती है। लेकिन संगीत रचना के साथ सादृश्य याद रखें। आप संगीत सुन सकते हैं और संगीत के दौरान प्रभावित हो सकते हैं, वास्तव में यह समझे बिना कि लेखक ने कितनी सावधानी से चीजों को बल देने के लिए, वह प्रभाव देने के लिए संरचित किया है। ताकि बिना यह जाने कि इसे कितनी सावधानी से संरचित किया गया है, आप इसे पढ़ सकते हैं और इससे प्रभावित हो सकते हैं। लेकिन जब आप बैठते हैं और इसका विश्लेषण करते हैं, तो आप पाते हैं कि इसके पीछे बहुत सावधानीपूर्वक संरचना है।

ब्रह्मांड की रचना किसने की? अब, यदि आप उस पुस्तिका को देखते हैं, तो आप देखते हैं कि श्लोक 12 में आपके पास प्रश्न है, "ब्रह्मांड को किसने बनाया?" और प्रश्न के पाँच पहलू हैं और सभी का उत्तर है: ईश्वर। देखो, “ किस ने अपनी हथेली से जल को मापा है, या अपनी हथेली से आकाश को मापा है? किस ने पृथ्वी की धूल को टोकरी में रखा, या पहाड़ों को तराजू में, और पहाड़ोंको तराजू में तौला है? “आपके पास वहां पांच वाक्यांश हैं। ये सब काम किसने किया है? ब्रह्माण्ड की रचना किसने की? सभी के पास उत्तर है: भगवान. वह पहला स्ट्रोफ़े है.

यशायाह 40:13-14 सृष्टि में परमेश्वर का सहायक कौन था? दूसरा, दोनों का संबंध प्रकृति से है--और दूसरा अध्याय 40, श्लोक 13 और 14 है--वहाँ प्रश्न है: "सृष्टि में ईश्वर का सहायक कौन था?" और फिर से आपको प्रश्न के पाँच पहलू मिलते हैं। देखिए वहां एक संरचना है—पांच और पांच। लेकिन यहाँ, सभी का उत्तर है: "कोई नहीं।" “ किस ने यहोवा की मन की बात समझी, वा उसे

परामर्शदाता होकर शिक्षा दी है? यहोवा ने उसे प्रबुद्ध करने के लिए किससे सलाह ली, और उसे सही मार्ग किसने सिखाया? वह कौन था जिसने उसे ज्ञान सिखाया या समझ का मार्ग दिखाया? “फिर से यह पाँच वाक्यांशों में टूट जाता है। सभी का जवाब था: "कोई नहीं।"

यशायाह 40:15-17 राष्ट्र शून्य हैं फिर आप तीसरे चरण की ओर बढ़ते हैं, जो पहला चरमोत्कर्ष है, छंद 15-17, "राष्ट्र शून्य हैं।" आप एक परिवर्तन करें; पहले दो चरण प्रकृति से संबंधित हैं: “ब्रह्मांड का निर्माण किसने किया; सृष्टि में ईश्वर का सहायक कौन था?” तीसरा चरण इतिहास की ओर बढ़ता है, ताकि श्लोक 15 से 17 में आप पढ़ें, “ निश्चय राष्ट्र बाल्टी में बूँद के समान हैं; उन्हें तराजू पर धूल के समान माना जाता है; वह द्वीपों को ऐसे तौलता है मानो वे बारीक धूल हों। लबानोन वेदी की आग के लिये पर्याप्त नहीं है, न ही उसके जानवर होम-बलि के लिये पर्याप्त हैं। उसके साम्हने सब जातियां तुच्छ हैं; उन्हें उसके द्वारा बेकार और किसी भी चीज़ से कम माना जाता है । अत: राष्ट्र शून्य हैं। बेबीलोन शक्तिशाली लग सकता है, खासकर यदि आप बेबीलोन में निर्वासन में हैं, लेकिन ईश्वर की शक्ति के सामने राष्ट्र कुछ भी नहीं हैं। वे कुछ भी नहीं हैं; वे बाल्टी में एक बूंद की तरह हैं; उन्हें तराजू पर

छोटी धूल के रूप में गिना जाता है—देखें इस प्रकार की छवियां राष्ट्रों की शक्ति की महत्वहीनता को इंगित करती हैं। यशायाह 40:18-20 मूर्तिपूजा का विषय और मूर्तिपूजा की व्यर्थता

यदि आप चौथे चरण, श्लोक 18-20 पर जाते हैं तो आपके विचार में फिर से आमूल-चूल परिवर्तन होता है। आप मूर्तिपूजा और मूर्तिपूजा की निरर्थकता के इस विषय पर आगे बढ़ें। मूर्तियाँ हिलती नहीं; अध्याय 40, श्लोक 18-20, “ तो फिर, तुम परमेश्वर की तुलना किस से करोगे? आप उसकी तुलना किस छवि से करेंगे? और मूरत को कारीगर ढालता है, और सुनार उसे सोने से मढ़ता है, और उसके लिये चान्दी की जंजीरें बनाता है। एक आदमी जो इतना गरीब है कि ऐसी भेंट चढ़ाने में असमर्थ है, वह ऐसी लकड़ी चुनता है जो सड़ती नहीं है। वह ऐसी मूर्ति स्थापित करने के लिए एक कुशल कारीगर की तलाश करता है जो गिरेगी नहीं। ध्यान दें कि वाक्यांश का परिचय इस प्रश्न से होता है, "आप किससे तुलना करेंगे?" आप ईश्वर की तुलना किससे करेंगे? या आप उसकी तुलना

किस समानता से करेंगे? क्या आप भगवान की तुलना मनुष्य द्वारा बनाये गये लकड़ी के इन टुकड़ों से करने जा रहे हैं? तो पहले खंड का विचार तुलना द्वारा विकसित किया गया है। ईश्वर प्रकृति का स्वामी है; वह इतिहास का भगवान है, और आप उसकी तुलना लकड़ी की छड़ी से करते हैं। आप ईश्वर की तुलना किससे करेंगे?

यशायाह 40:21-24 परमेश्वर प्रकृति और इतिहास का प्रभु है

जब आप पांचवें चरण, श्लोक 21-24 पर पहुंचते हैं, तो आपके पास दूसरा चरमोत्कर्ष होता है। ईश्वर प्रकृति और इतिहास का भगवान है ; प्रकृति और इतिहास को एक साथ लाया गया है। अध्याय 40, श्लोक 21-24 में पढ़ा गया, " क्या तुम नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? क्या यह तुम्हें शुरू से नहीं बताया गया है? क्या तुम पृथ्वी की उत्पत्ति के समय से ही नहीं समझे? वह पृथ्वी के घेरे के ऊपर विराजमान है, और उसके लोग टिड्डियों के समान हैं। वह आकाश को छत्र के समान तानता है, और रहने के लिये तम्बू के समान फैलाता है। वह हाकिमों को तुच्छ कर देता है, और इस जगत के हाकिमों को तुच्छ कर देता है। ज्योंही वे रोपे जाते, और त्योंही वे बोए जाते, और ज्योंही वे भूमि में जड़ पकड़ते, त्योंही वह उन पर फूंक मारता और वे सूख जाते, और बवण्डर उन्हें भूसी की नाईं उड़ा ले जाता है । अब, इस दूसरे चरमोत्कर्ष में, आपने इसे फिर से यहाँ एक प्रश्न के साथ प्रस्तुत किया है, "क्या आप नहीं जानते हैं? क्या तुमने नहीं सुना? क्या तुम्हें आरम्भ से ही यह नहीं बताया गया?" ईश्वर प्रकृति और इतिहास का भगवान है , और साहित्यिक निर्माण में आपके पास चार "नहीं हैं।" श्लोक 21, इस हिब्रू अभिव्यक्ति *ha'l'o के साथ प्रस्तुत किया गया है*? "क्या तुम्हें पता नहीं है? क्या तुमने नहीं सुना? क्या तुम्हें यह नहीं बताया गया? क्या तुम्हें समझ नहीं आया?" चार हैं "क्या आपके पास नहीं है" - *हा लो*। फिर तीन सहभागी दोहरी पंक्तियाँ, श्लोक 22-23। तीन सहभागी दोहरी पंक्तियाँ: "वह जो बैठता है," श्लोक 22, " वह पृथ्वी के घेरे के ऊपर सिंहासन पर बैठा है, और उसके लोग टिड्डियों के समान हैं। वह आकाश को छत्र के समान तानता है, और रहने के लिये तम्बू के समान फैलाता है। वह हाकिमों को तुच्छ कर देता है, और इस जगत के हाकिमों को तुच्छ कर देता है। " तो वह जो बैठता है, फैलता है, लाता है: आपके पास ये कृदंत हैं। फिर तीन

क्रियाओं को "शायद ही" या "मुश्किल से" द्वारा प्रस्तुत किया गया - यह हिब्रू में है। “हाँ,” किंग जेम्स कहते हैं, “उन्हें नहीं लगाया जाएगा; हां, वे बोए नहीं जाएंगे, हां, उनका डंठल भूमि में जड़ नहीं पकड़ पाएगा। श्लोक 24 में तीन क्रियाओं को "शायद ही," या "मुश्किल से" द्वारा प्रस्तुत किया गया है। फिर शार्प *वी गम* 24बी में निष्कर्ष का परिचय देता है। राजा जेम्स कहते हैं, "और वह भी करेगा," लेकिन यह *हम गम है*। "और वह उन पर फूंक मारेगा, और वे सूख जाएंगे, और बवण्डर उन्हें भूसी की नाईं उड़ा ले जाएगा।"

अब वह निष्कर्ष दूसरा चरमोत्कर्ष प्रदान करता है, जो पहले को और अधिक निश्चित बनाता है। पहला- राष्ट्र कुछ भी नहीं हैं। परन्तु यहाँ वह उन पर वार करने जा रहा है; वे सूख जायेंगे और खूंटी की तरह उड़ा लिये जायेंगे। श्लोक 22 और 23 के त्रय के बीच तुलना, या पत्राचार पर ध्यान दें - ये सहभागी दोहरी पंक्तियाँ हैं - पहले तीन चरणों के साथ। श्लोक 22, ईश्वर सृष्टिकर्ता है। देखो, पद 22 उसके विषय में कहता है जो पृथ्वी के घेरे पर बैठा है, और उसके निवासी टिड्डे के समान हैं। वह आकाश को परदे की नाईं तानता, और निवास के तम्बू के समान फैलाता है। ईश्वर सृष्टिकर्ता है, इसकी तुलना उस प्रथम चरण से की जाती है, "ब्रह्मांड की रचना किसने की?" जबकि श्लोक 23 इतिहास में ईश्वर का कार्य है, जिसकी तुलना तीसरे चरण से की जाती है, "राष्ट्र शून्य हैं।" आप प्रतिभागियों को देखते हैं, "वह जो बैठता है" और "वह जो फैलता है" - पहले दो चरण। "वह जो राजकुमारों को नष्ट कर देता है" - यह इतिहास है, और इसकी तुलना इतिहास में भगवान के कार्य से की जाती है जिसे आप उन दोहरी सहभागी पंक्तियों के तीसरे भाग में देखते हैं। आपको प्रकृति से इतिहास की ओर बढ़ती संरचना की पुनरावृत्ति मिलती है: दोनों स्थानों पर प्रकृति की दो-दो, इतिहास की एक-एक।

यशायाह 40:25-27 तुम मेरी तुलना किस से करोगे? भगवान अतुलनीय हैं

छठे श्लोक पर आगे बढ़ें, अध्याय 40 श्लोक 25-27, "' तुम मेरी तुलना किससे करोगे? अथवा मेरे बराबर कौन है?' पवित्र व्यक्ति कहते हैं. अपनी आँखें उठाओ और स्वर्ग की ओर देखो: यह सब किसने बनाया? वह जो तारों से भरे मेज़बान को एक-एक करके बाहर लाता है, और उनमें से प्रत्येक को नाम से बुलाता है। उनकी महान शक्ति और शक्तिशाली ताकत के कारण, उनमें से

एक भी गायब नहीं है। हे याकूब, तू क्यों कहता है, और हे इस्राएल तू क्यों शिकायत करता है, कि मेरा मार्ग यहोवा से छिपा है; मेरे मामले की मेरे भगवान ने उपेक्षा की है"?

श्लोक 25-27, प्रभु अतुलनीय है। आपके पास वही प्रश्न है, आप देखते हैं, चरण छह का परिचय देते हुए, जैसा कि आपने चरण चार में किया था, "आप मेरी तुलना किससे करेंगे?" प्रभु अतुलनीय हैं, और आप देखते हैं कि उस खंड का वास्तविक फोकस, 25 से 27 में, श्लोक 27 में है। आप प्रभु की तुलना किससे करेंगे? अब आप उनकी रचनात्मक शक्ति को देखिए. पद 27 में आप यह कैसे कह सकते हैं कि मेरा मार्ग प्रभु से छिपा है? आप कठिनाई में हो सकते हैं, आप दुःख में हो सकते हैं, आप समझ नहीं सकते कि क्या हो रहा है, लेकिन जब आप इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि ईश्वर कौन है, प्रकृति पर उसके शासन पर, इतिहास पर उसके शासन पर, तो आप कैसे सवाल कर सकते हैं कि वह ऐसा नहीं करता है पता है तुम्हारे साथ क्या हो रहा है?

संकट में फंसे भगवान के लोगों के लिए इतिहास परम सांत्वना है। पुनः, इसका परिचय इस प्रश्न से मिलता है, "क्या आप नहीं जानते?" बिल्कुल उस दूसरे चरमोत्कर्ष की तरह। “क्या तुम्हें पता नहीं है? क्या तुम ने नहीं सुना, कि सनातन परमेश्वर यहोवा, जो पृथ्वी की छोरोंका सृजनहार है, थकता नहीं, और थकता नहीं? उसकी समझ की कोई खोज नहीं है. वह मूर्छा को शक्ति देता है; जिनके पास कोई शक्ति नहीं है, वह उनकी शक्ति बढ़ाता है। जवान तो थक जाएंगे और थक जाएंगे, जवान तो गिर पड़ेंगे; परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे; वे उकाबों के समान पंख फैलाकर उड़ेंगे; वे दौड़ेंगे, और थकेंगे नहीं; वे चलेंगे और थकेंगे नहीं।” तो आप पूर्ववर्ती श्लोक 27 में देखें, जो इतना शक्तिशाली है वह उन लोगों को कैसे भूल सकता है जिन्हें उसने अपने उद्देश्यों के लिए अलग कर दिया है? तुम यह क्यों कहते हो, कि मेरा मार्ग यहोवा से छिपा है?

यशायाह 40:28-31 अध्याय 40 , श्लोक 28-31, उस प्रश्न का उत्तर हैं। उत्तर, फिर से, सामान्य शब्दों में दिया गया है, मुझे लगता है, यह उन सभी स्थितियों पर लागू होता है जहां लोग भगवान पर संदेह करने के लिए प्रलोभित होते हैं। यदि परमेश्वर की योजना कार्यान्वित होती नहीं दिख रही है,

तो आप निश्चिंत हो सकते हैं कि ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वह जो भी चुनता है उसे करने के लिए बहुत कमज़ोर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम उसकी योजना को पूरी तरह से नहीं समझते हैं। " क्या आप नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? यहोवा सनातन परमेश्वर है, और पृथ्वी की छोर तक का रचयिता है। वह थकेगा या थकेगा नहीं, और उसकी समझ का कोई अंदाज़ा नहीं लगा सकता। ” हम उसकी समझ की खोज नहीं कर सकते; वह आरंभ से ही अंत जानता है—हम नहीं जानते। जिस स्थिति में हम खुद को पाते हैं उसके कारण क्या हैं, यह शायद हम ठीक से न समझ पाएं, लेकिन उसकी शक्ति वह सब कुछ पूरा करने के लिए पर्याप्त है जिसे वह करने का बीड़ा उठाता है; वह कभी बेहोश नहीं होता, वह कभी थकता नहीं। लेकिन इतना ही नहीं, वह उन लोगों को शक्ति देता है जो थक जाते हैं - यदि वे प्रभु की प्रतीक्षा करेंगे। तो फिर, परमेश्वर के लोगों के लिए यही संदेश है: प्रभु की प्रतीक्षा करें, और वे अपनी ताकत को नवीनीकृत करेंगे।

तो, अध्याय 40 एक उल्लेखनीय अध्याय है। हमने इसे जल्दी से समझ लिया, लेकिन मुझे आशा है कि यह आरेख आपको संगठन की जटिलता और इसके निर्माण के सावधानीपूर्वक तरीके का कुछ अंदाज़ा देगा, भले ही यदि आप इसे पढ़ें और इसकी रूपरेखा बनाने का प्रयास करें, तो इसे रेखांकित करना बहुत कठिन है। लेकिन वहां एक बहुत ही सावधानीपूर्वक संरचना है: चीजों की पुनरावृत्ति, संरचनात्मक संगठन जो अध्याय पढ़ते समय आप पर जोरदार प्रभाव डालता है, भले ही आपने इसका विश्लेषण नहीं किया हो। लेकिन आप जानते हैं कि यह बाइबिल में लोगों के पसंदीदा अध्यायों में से एक है, यशायाह अध्याय 40, अच्छे कारण के साथ।

प्रभु का सेवक थीम - चार सेवक भजन इस बिंदु से मैं जो करना चाहता हूं, जैसा कि आप अपनी रूपरेखा पर ध्यान देते हैं, प्रभु के सेवक की थीम की ओर बढ़ना है। मैंने आपको वे 5 या 6 थीम दी हैं। यह अच्छा होगा यदि हम यशायाह 41 से 66 तक आगे बढ़ सकें और उन सभी विषयों को विकसित करने के तरीके का पता लगा सकें। किसी एक को छोड़ना दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि आपको उनका पूरा प्रभाव नहीं मिलेगा, क्योंकि वे सभी बहुत करीब से जुड़े हुए हैं - वे एक साथ काम करते हैं। लेकिन समय को ध्यान में रखते हुए, हम ऐसा नहीं कर सकते। तो मैं जो करना

चाहता हूं वह एक विषय, प्रभु का सेवक, और उस विषय के माध्यम से काम करना है। यह निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण है, विशेषकर मसीहाई दृष्टिकोण से। आइए देखें कि यह कैसे काम करता है।

अब, विशिष्ट परिच्छेदों पर जाने से पहले सामान्य तौर पर कुछ टिप्पणियाँ। आलोचनात्मक विद्वानों ने अक्सर जिसे वे "चार सेवक स्तोत्र" कहते हैं, उसे अलग करने का प्रयास किया है। हमने व्हायब्रे में चार तथाकथित "सेवक भजन" के बारे में टिप्पणी पढ़ी - जो आपके उद्धरणों के पृष्ठ 29 के शीर्ष पर है। लेकिन जो चार सामान्यतः अलग-थलग हैं वे हैं 42:1-7; सेवक परिच्छेदों को उन चार परिच्छेदों तक सीमित करना वास्तव में सही नहीं है, लेकिन वे निश्चित रूप से चार प्रमुख परिच्छेद हैं। लेकिन आलोचनात्मक विद्वान अक्सर उन चारों को अलग कर देते हैं और कहते हैं कि उनकी अपनी अलग उत्पत्ति और लेखकत्व है; वे मूल पाठ के लिए गौण हैं और उन्हें मूल पाठ में डाला गया है। लेकिन जैसा कि मैंने बताया, वह विषय केवल उन चार अंशों तक सीमित होने की तुलना में कहीं अधिक जटिल है। यह कई अन्य स्थानों पर भी पाया जाता है। मैं जो करना चाहता हूं वह यशायाह के इस खंड में नौकर के प्रत्येक संदर्भ के माध्यम से पता लगाना है क्योंकि हम नौकर विषय को देखते हैं। तो आइए इसे शुरू करें, और हम जो करना चाहते हैं वह यह देखना है कि सेवक विषय निर्वासितों की इस बड़ी समस्या से कैसे संबंधित है - क्या संबंध है और, निश्चित रूप से, यह मसीह के आगमन से कैसे संबंधित है।

1. यशायाह 41:8 इस्राएल, तू मेरा दास है पहला यशायाह 41:8 और निम्नलिखित है। तुम वहाँ पढ़ते हो, “ परन्तु हे इस्राएल, हे मेरे दास याकूब, तू जिसे मैं ने चुन लिया है, तू मेरे मित्र इब्राहीम की सन्तान है। मैं ने तुम्हें पृथ्वी की छोर से ले आया, और उसके दूर दूर के कोनों से मैं ने तुम्हें बुलाया। मैंने कहा, 'तुम मेरे नौकर हो'; मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें अस्वीकार नहीं किया है। इसलिये मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं; निराश मत हो, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूं। मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा; मुझे तुम्हें अपने नेक दाहिने हाथ से अपलोड करना है। “मैं फिलहाल आगे नहीं पढ़ने जा रहा हूं। लेकिन यह पहली घटना है, आप श्लोक 8 और 9 में, प्रभु के सेवक की अभिव्यक्ति

को देखते हैं: "तुम मेरे सेवक हो," प्रभु बोल रहे हैं।

अब, पुराने नियम में अन्यत्र "नौकर" शब्द का प्रयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है, अक्सर केवल धर्मनिष्ठ लोगों के लिए; कभी-कभी, अधिक विशेष रूप से, भविष्यवक्ताओं के लिए—यह मूसा के लिए उपयोग किया जाता है, यह यहोशू के लिए उपयोग किया जाता है, और यह एलिय्याह के लिए उपयोग किया जाता है। लेकिन जैसा कि यशायाह में प्रयोग किया गया है, यह एक विशेष महत्व रखता है। जैसे ही हम विषय का पता लगाते हैं यह स्पष्ट हो जाता है। इसकी शुरुआत यहां अध्याय 41 से होती है; इसके बाद इसका महत्व बढ़ जाता है और अध्याय 53 में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है। जैसा कि हम देखेंगे, पहले तो यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि नौकर वाक्यांश का क्या मतलब है। हालाँकि यह श्लोक 8 काफी स्पष्ट लगता है, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं यह और अधिक जटिल होता जाता है। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है—"इस्राएल, तू मेरा सेवक है।" नौकर कौन है?--यहाँ स्पष्ट प्रतीत होता है कि इज़राइल नौकर है। इस अनुच्छेद में हम जो पाते हैं वह यह है कि, प्रभु कारण बताते हैं कि वह इस्राएल की रक्षा क्यों करने जा रहे हैं; वह कहता है कि उसने इस्राएल को अपना सेवक बनने के लिए चुना है, "हे इस्राएल तुम मेरे सेवक हो।"

श्लोक 10: "मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूं। मैं तुम्हें दृढ़ करूंगा; मैं आपकी मदद करूँगा; मैं तुम्हारा समर्थन करूंगा।" यदि आप पद 13 पर जाएँ, " क्योंकि मैं यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हारा दाहिना हाथ पकड़कर तुमसे कहता है, 'मत डर; मैं आपकी मदद करूँगा। हे कीड़े याकूब, हे छोटे इस्राएल, मत डर, क्योंकि मैं आप ही तेरी सहायता करूंगा, तेरा उद्धारकर्ता, इस्राएल का पवित्र, यहोवा की यही वाणी है। 'देखो, मैं तुम्हें खलिहान बनाने की एक नई और तेज़, बहुत दाँतों वाली स्लेज बनाऊँगा।' "

यदि आप इस अंश को पढ़ते हैं, तो सेवक को ईश्वर द्वारा बुलाया जाता है और उसे त्यागा नहीं जाएगा। सेवक के शत्रु पराजित हो जायेंगे, परन्तु सेवक की शक्ति प्रभु में पाई जाती है, स्वयं में नहीं। देखिये, पद 14 कहता है, "' हे कीड़े याकूब, हे छोटे इस्राएल, मत डर, क्योंकि मैं स्वयं तेरी सहायता करूंगा,' तेरा उद्धारकर्ता, इस्राएल का पवित्र, यहोवा की यही वाणी है। 'देखो, मैं तुम्हें खलिहान बनाने वाली स्लेज बनाऊंगा ।" तो अध्याय 41 में यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि नौकर

इस्राएल है। परिच्छेद का विस्तार पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि यह विषय कितनी दूर तक जाता है; संभवतः श्लोक 19 तक, लेकिन इस पर बहस चल रही है। लेकिन वहां सब कुछ बिल्कुल सामान्य है.

2. यशायाह 42:1-7 सेवक जो कार्य करेगा आइए दूसरे अनुच्छेद पर चलते हैं, और यह प्रमुख अंशों में से एक है - यशायाह 42:1-7: "' यह मेरा सेवक है, जिसे मैं संभाले रखता हूं, मेरा चुना हुआ वह जिससे मैं प्रसन्न रहता हूँ; मैं उस पर अपना आत्मा समवाऊंगा, और वह अन्यजातियों का न्याय करेगा। वह न चिल्लाएगा, न चिल्लाएगा, न सड़कों पर अपनी आवाज उठाएगा। वह कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा, और न सुलगती हुई बत्ती को बुझाएगा। वह सच्चाई से न्याय प्रगट करेगा; वह तब तक नहीं लड़खड़ाएगा या हतोत्साहित नहीं होगा जब तक वह पृथ्वी पर न्याय स्थापित नहीं कर देता। द्वीप उसके कानून पर अपनी आशा रखेंगे।' परमेश्वर यहोवा, जिसने स्वर्ग का सृजन किया, यों कहता है ।

यहां आपको उस रचनात्मक शक्ति विषय के साथ कविता का अंतर्विस्तार मिलता है। “वह जो पृथ्वी को और उस में से जो कुछ उत्पन्न होता है उस सब को फैलाता है, और उस पर चलनेवालोंको प्राण देता है, और उस पर चलनेवालोंको जीवन देता है; मैं यहोवा ने तुझे धर्म से बुलाया है; मैं तुम्हारा हाथ पकड़ लूंगा. मैं तेरी रक्षा करूंगा, और तुझे प्रजा के लिथे वाचा और अन्यजातियोंके लिथे ज्योति ठहराऊंगा, कि अंधोंकी आंखें खोलूंगा, बन्धुओंको बन्दीगृह से छुड़ाऊंगा, और अन्धियारे में बैठे हुओंको बन्दीगृह से निकालूंगा। ”

तो यशायाह 42:1-7 में, आप फिर से नौकर के बारे में बात कर रहे हैं: "मेरे नौकर को देखो।" नौकर क्या काम करेगा उसका एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। सेवक को ईश्वर के लिए संसार में एक कार्य करना है। यहां यह नहीं बताया गया है कि नौकर कौन है, जैसा कि यशायाह 41:8 और 9 में कहा गया है, "हे इस्राएल, तू मेरा दास है।" यहां यह नहीं बताया गया है कि नौकर कौन है, बल्कि नौकर को जो काम पूरा करना है उसकी एक तस्वीर दी गई है। यह रोचक है; यदि आप मत्ती 12:18-21 की ओर मुड़ें, तो यह परिच्छेद यीशु पर लागू होता है। मत्ती 12:18, “ यह मेरा

दास है, जिसे मैं ने चुन लिया है, जिस से मैं प्रेम रखता हूं, जिस से मैं प्रसन्न हूं; मैं उस पर अपना आत्मा समवाऊंगा, और वह जाति जाति को न्याय का प्रचार करेगा। वह न झगड़ा करेगा, न चिल्लाएगा; सड़कों पर कोई उसकी आवाज़ नहीं सुनेगा। वह कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा, और न सुलगती हुई बत्ती को बुझाएगा, जब तक कि वह न्याय को जय न पहुंचा दे। राष्ट्र उसके नाम पर आशा रखेंगे। " यह संदर्भ स्पष्ट रूप से यीशु पर लागू होता है। परन्तु अध्याय 42 के एक श्लोक में यह कहा गया है, "मेरे दास को देखो, जिसे मैं सम्भालता हूं; मेरा चुना हुआ," - सेवक भगवान का चुना हुआ है, जिसकी आत्मा वह प्रसन्न है, और भगवान की आत्मा उस पर है, और वह राष्ट्रों को न्याय दिलाएगा - अन्यजातियों को।

श्लोक 2 से 4 में आपको उनके आचरण की गरिमा और सौम्यता का पता चलता है। वह रोने या चिल्लाने या सड़क पर अपनी आवाज़ सुनाने वाला नहीं है; कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा। वह अपने कार्य को पूरा करने के लिए हिंसक प्रयास नहीं करता। लेकिन उनका काम विश्वव्यापी होना है. अध्याय 42, श्लोक 4 में ध्यान दें, "जब तक वह पृथ्वी पर न्याय स्थापित न कर ले, तब तक वह न टलेगा और न हतोत्साहित होगा; और देश देश के देश उसकी व्यवस्था की बाट जोहेंगे।" "तट" सुदूर भूमि का संदर्भ है।

श्लोक 5 नौकर के काम के इस विवरण को इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाधित करता है : "यह कैसे हो सकता है?" और "यह कैसे संभव है?" खैर, यह संभव है क्योंकि भगवान ऐसा कहते हैं, और भगवान स्वर्ग के निर्माता हैं। "परमेश्वर यहोवा, जिसने आकाश का सृजन किया, और उन्हें बढ़ाया [या फैलाया], यों कहता है।"

उठ रहे सवाल अब इस बिंदु पर सवाल उठने शुरू हो गए हैं. आप देखिए, यशायाह 41:8 और 9 में कहा गया है, "इस्राएल, तू मेरा दास है।" लेकिन सवाल यह उठता है कि जो यहां बताया गया है उसे इज़राइल कैसे पूरा कर सकता है? बंधन, दुख और निर्वासन में रहने वाले लोग वह कैसे कर सकते हैं जो यहाँ कहा गया है, कि प्रभु का सेवक करेगा? देखिये, पद 6 और 7 कहता है, " मैं यहोवा ने तुझे धर्म से बुलाया है; मैं तुम्हारा हाथ पकड़ लूंगा. मैं तेरी रक्षा करूंगा, और तुझे प्रजा के लिथे वाचा,

और अन्यजातियोंके लिथे ज्योति ठहराऊंगा, कि अंधोंकी आंखें खोलूंगा, बन्धुओंको बन्दीगृह से छुड़ाऊंगा, और अन्धियारे में बैठे हुओंको बन्दीगृह से निकालूंगा। यशायाह

42:19-24 इस्राएल ऐसा कैसे कर सकता है जबकि इस्राएल स्वयं एक कैदी है? इजराइल ऐसा कैसे कर सकता है जब इजराइल खुद एक कैदी है? यह प्रश्न केवल ऐसा नहीं है जो इसे पढ़ते समय आपके मन में या इसे सुनने वाले के मन में आ सकता है; यह वह है जिसे बाद में अध्याय में भी व्यक्त किया गया है। आइए पद 19 की ओर चलें, " मेरे दास को छोड़ कौन अन्धा, और मेरे भेजे हुए दूत के तुल्य बहिरा कौन है? जो मुझे सौंपा गया उसके तुल्य कौन अन्धा है, और यहोवा के दास के तुल्य कौन अन्धा है? तुमने बहुत सी चीज़ें देखी हैं, परन्तु उन पर ध्यान नहीं दिया; तुम्हारे कान खुले हैं, परन्तु तुम कुछ नहीं सुनते। यहोवा को यह अच्छा लगा कि वह अपने धर्म के कारण अपनी व्यवस्था को महान और महिमामय बनाए। लेकिन यह तो लुटे-पिटे लोग हैं, सब के सब गड्ढ़ों में फँस गये या कारागारों में छिपे हुए हैं। वे लूटे गए, और कोई उन्हें छुड़ानेवाला नहीं; उन्हें लूट लिया गया है, और कोई यह कहने वाला नहीं है, 'उन्हें वापस भेज दो।' तो श्लोक 19 में वही प्रश्न व्यक्त किया गया है: इज़राइल ऐसा कैसे कर सकता है जब वह स्वयं अंधी और बहरी है?

परन्तु पद 21 कहता है, दास का काम पूरा हो जाएगा: "यहोवा उसके धर्म के कारण प्रसन्न है; वह व्यवस्था की महिमा करेगा, और उसे सम्माननीय बनाएगा।" फिर श्लोक 22 में, आपके सामने फिर वही कठिनाई है: जब इस्राएल लूटी हुई और लुटी हुई, छेदों में फँसी हुई, बन्दीगृहों में छिपी हुई प्रजा है, तो इस्राएल सेवक के काम की माँगों को कैसे पूरा कर सकता है? समस्या अनुत्तरित प्रतीत होती है.

लेकिन श्लोक 24 में एक अतिरिक्त नोट है जो कहता है, "किस ने याकूब को लूट लिया, और इस्राएल को लुटेरों को दे दिया? क्या यहोवा ने, जिसके विरुद्ध हम ने पाप किया है, नहीं किया?" श्लोक 24 बताता है कि इस्राएल उस स्थिति में क्यों है जिसमें वे हैं। इस्राएल को क्यों लूटा और बर्बाद किया गया है? इजराइल जेलखाने में क्यों है? इजराइल अंधा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने पाप किया है। और क्योंकि उन्होंने पाप किया, परमेश्वर ने अपने लोगों को निर्वासन

और पीड़ा में डाल दिया। “ आपमें से कौन आने वाले समय में इसे सुनेगा या ध्यान से ध्यान देगा? किस ने याकूब को लूटने के लिये, और इस्राएल को लुटेरों के हाथ में सौंप दिया? क्या वह यहोवा नहीं, जिसके विरुद्ध हम ने पाप किया है? क्योंकि वे उसके मार्ग पर न चलेंगे; उन्होंने उसकी व्यवस्था का पालन नहीं किया। इसलिए उसने उन पर अपना जलता हुआ क्रोध, युद्ध की हिंसा भड़काई। ”

तो आप अध्याय 42 में देखते हैं, आपके पास एक सेवक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो पृथ्वी के छोर तक, अन्यजातियों तक, राष्ट्रों तक प्रकाश और उद्धार लाएगा; कैद, जेल और बंधन से मुक्ति पाने के लिए। यशायाह 41 ने कहा है कि इस्राएल परमेश्वर का सेवक है। लेकिन सवाल यह है कि इज़राइल ऐसा कैसे कर सकता है जब इज़राइल स्वयं अपने पाप के कारण बंधन में है और अंधकार में है? इसलिए हमें इस विषय का और अधिक पता लगाना होगा। आप देखें, इस बिंदु तक, आपके पास बहुत सारे प्रश्न हैं। इजराइल सेवक है, इजराइल को एक काम करना है, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि इजराइल यह काम कर पाएगा क्योंकि इजराइल खुद ही पापी है और गुलामी में है. जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे आपको इसके लिए किसी प्रकार के समाधान की आवश्यकता होगी।

मेरा समय ख़त्म हो गया है. हम विषय को आगे उठाएंगे।

डाना एंगल द्वारा लिखित,
प्रारंभिक संपादन कार्ली गिमन द्वारा,
रफ संपादन टेड हिल्डेब्रांट द्वारा,
अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा
, पुनः वर्णन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा